उषाकिरण खान का कथा लोक

ISBN	: 978-81-948225-8-5
कापीराइट	: सुरक्षित
सम्पादक	: डॉ0 सोनी पाण्डेय
प्रकाशक	: **आपस पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स**
	एल.आई.जी.-57 कोशलपुरी फेस-1
	फैज़ाबाद, अयोध्या, उत्तर प्रदेश-224001
Email	aapaspublishers@gmail.com,
	dr.vmani19@gmail.com
	9628961860, 9919394133
संस्करण	: 2021 प्रथम
आवरण चित्र	: उषाकिरण खान
सहयोग राशि	: 285.00 (दो सौ पचासी रूपये मात्र)
मुद्रक	: श्रीजी ग्राफिक्स, दिल्ली

अनुक्रम

क्र.सं.	विषय / लेखक	पृष्ठ
1–	भूमिका – **डॉ0 सोनी पाण्डेय**	9–14
2–	शेफाली झर रही है – **डॉ0 विद्यानिवास मिश्र**	15–22
3–	जीवनानुभवों का उदात्त – **डॉ0 चन्द्रकला त्रिपाठी**	23–34
4–	जल प्लावन में तटबंध की तरह – **प्रज्ञा पाण्डेय**	35–41
5–	सहज किन्तु साधारण नहीं – **पूनम सिन्हा**	42–58
6–	उषाकिरण खान की सवर्ण विधवाएँ – **भावना शेखर**	59–65
7–	लोक जीवन का समुच्चय – **डॉ0 गौरी त्रिपाठी**	66–75
8–	उषाकिरण खान की कहानियाँ – **आभा बोधिसत्व**	76–82
9–	अतीत के वर्तमान की वृहत्तर स्वीकृति – **पूनम सिंह**	83–90
10–	नीलकंठ और जलकुंभी एक विश्लेषण – **रानी सुमिता**	91–98
11–	उषाकिरण खान की कहानियों का नाट्य प्रयोग – **कनुप्रिया पण्डित**	99–102

लोक जीवन का समुच्चय

– डॉ0 गौरी त्रिपाठी

उषा किरण खान महिला कथाकारों में एक अलग ही मनोभाव की रचनाकार हैं, खास तौर पर स्त्री मन की रचनाकार हैं, स्त्री मन को जितनी कुशलता और बारीकी के साथ अपने कथा साहित्य में प्रस्तुत करती हैं, वह वाकई प्रशंसनीय है। वे निरंतर स्त्री मन को अपनी कथा साहित्य में लिखती चली जा रही हैं। अपने समकालीन कथाकारों में उनकी कहानियों का एक अलग टेक्सचर और स्वर है, खासतौर पर ग्रामीण स्त्रियों के मन के सभी मनोभाव को बहुत तत्परता के साथ गंभीरता के साथ प्रस्तुत करती हैं। स्त्री–प्रेम, स्त्री के जीवन में प्रेम पीड़ा, दुख, उदासियाँ किस कदर और किस रास्ते से आती हैं यह तो अमूमन सभी स्त्री जानती है, लेकिन उसे इतनी सहजता के साथ उषाकिरण खान अपनी कहानियों में पिरोती हैं शायद वह लिखकर के अपने को बरी करती होंगी।

लिख लेना स्त्री मनोभाव को एक अदद जगह दे देना होता है, मूल्यांकन करने के लिए इस समाज में उसे छोड़ देना होता है। वैसे उनका लिखना हर समय में चुनौतीपूर्ण और कठिन रहा है। उनके लिखे से ही उनके समूचे व्यक्तित्व का मूल्यांकन कर दिया जाता है जो कि निहायत एक पक्षीय होता है।

स्त्री समाज, परिवार और जीवन को देखती और समझती है फिर उसे अपने नजरिए से अपने कथा साहित्य में प्रस्तुत करती है। केवल स्त्री ही नहीं बल्कि पूरा समाज इनकी रचनाओं में अपने स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत है। इनका कथा साहित्य मनुष्य के पक्ष में खड़ा दिखाई पड़ता है। वह मनुष्य जो अपनी संस्कृति का भी साथ